राष्ट्रसंत गाडगे बाबा

प्रस्तावना:-

गतिविधि

प्रस्तावना:-

देखा बच्चो, आपने एक छोटी सी घटना किस प्रकार से अनन्य साधारण महत्व की हो जाती है, और इसके पीछे कारण होता है हमारा अंध-विश्वास.....

इसी अंध-विश्वास, निरक्षरता, अस्वच्छता से लड़ने का बीड़ा उठाया ..... राष्ट्र संत गाडगे बाबा ने ..... इस पाठ में उनके ही बारे में पढ़नेवाले हैं |

१.

बाबा का जन्म अमरावती जिले में हुआ था | उनके माता का नाम सखुबाई और पिता का नाम झिंगरा जी था|

बाबा वास्तव नाम देविदास देबूजी था.... हाथ में मिट्टी का कटोरा होने के कारण उन्हें गाडगे ("गाडगा" मराठी में मिट्टी को बर्तन को कहा जाता है)

बाबा का वेष बड़ा ही अजीबो-गरीब था| फटी-पुरानी चिंदियों की झालर उनके देह पर होती थी, कान में कौड़ी की बाली, और हाथ में झाड़ू हुआ करता था|

२.

बाबा स्वच्छता के पुजारी थे | उन्हों ना सिर्फ बाहरी ने गदंगी का विरोध किया अपितु उन्होंने हमारे मन को भी स्वच्छ रखने की मांग की.....

अपने मन में सभी के लिए प्यार होना चाहिए, हमें सबको समान मानना चाहिए, सबको समान आदर देना चाहिए.... इस बात के विषय में उन्होंने लोगों को जागृत किया|

३.

उन्होंने सदा कर्मकांडों का विरोध किया | वे निष्काम कर्मयोगी बने रहे | उन्होंने:-

- धार्मिक और आर्थिक लूट को रोका
- मनौती का विरोध किया
- चमत्कार और सिद्धियों का विरोध किया
- जादू-टोन का विरोध किया
- उन्होंने अंधश्रद्धियों की पोल खोली
- मेलों में पशुओं की बलि रोकी

४.

बाबा अखंड कर्मयोगी थे | उन्होंने जनता में ही भगवान का रूप देखा | उनका ध्येय समाज की उन्नति था | उन्होंने समाज के सभी स्तरों के लोगों तक अपने विचारों को पहुँचाने का अथक प्रयत्न किया | उनकी कोशिश रही कि समाज धर्म की गलत रूथियों से मुक्त हो जाए | उन्होंने:-

- समाज को विचारों का दान दिया
- समाज को सुंदर बनाने का आग्रह किया
- नारी-शिक्षा के दिशा में प्रयास किया
- दलित-जनों के शिक्षा-अभियान में जुटे रहे
- महारोगियों की सेवा की
- सामुदायिक कुँओं का निर्माण किया
- बाबा ने छुआछूत को पाप माना

यही उनकी भक्ति थी और यही उनकी पूजा....

५.

उनके चिन्तन की दस-सूत्री थी:-

- भूखे को रोटी
- प्यासे को पानी

- नंगे को कपड़ा
- निराधारों को आधार
- अपंग एवं रोगियों को दवाइयाँ
- बेकार हाथों को काम
- गूँगे पशु-पक्षियों को अभय
- गरीबों के विवाह की सुविधा
- दुःखी-निराश जनों को हिम्मत

६.

बाबा का धर्म-कीर्तन नवरसों का परिपोष हुआ करता था| बाबा ने कभी बंद मठों और मन्दिरों में कीर्तन नहीं किया बल्कि खुले आसमान के नीचे चौक-चौराहों पर वे कीर्तन किया करते थे| उनके कीर्तनों का उद्देश्य समाज की जागृति था.... अगर बंद मन्दिरों में करते तो समाज की जागृति किस प्रकार से संभव होती??

इन कीर्तनों में बाबा ने एक महान मन्त्र दिया, "गोपाल गोपाल देवकीनन्दन गोपाला....."

बाबा हँसते -हँसाते प्रश्न किया करते थे.... और सुनने वाले जवाब देते..... उनका कीर्तन मुक्त संवाद हुआ करता था....

बाबा की वाणी में अमृत भरा होता था... हँसते=हँसते वे जो भी बाते करते सुननेवाले को उसका मर्म तुरंत समझ आता था....

उनके हँसी में दबी हुई घुटन होती थी... जिसके कारण सुनने वाले के मन में समाज में व्याप्त बुराइयों को बदलने की इच्छा जागृत होती थी.....

बाबा अपने कीर्तनों में समाज का दुःख व्यक्त करते थे... उनकी वाणी नारीयल के समान होती थी.... बाहर से कठोर अंदर से मधुर.....

अपने कीर्तनों के जरिए बाबा ने त्री-सूत्री दी .....वह थी:-

शिक्षा-स्वावलंबन-स्वच्छता.....

७.

बाबा अनासक्त योगी थे....वे सेवा का हिमालय थे... त्याग का होमकुंड| उन्होंने:-

- साधना को सेवा का सन्दर्भ दिया... उनके अनुसार भगवान की पूजा करना और किसी की सेवा करना समान ही है.. “घर से मस्जिद है काफी दूर... क्यों न ऐसा किया जाए... चलो, किसी रोते हुए बच्चे को ही हँसाया जाए....
- अच्छे-वर्तन(सद्वर्तन) से बदलाव(परिवर्तन) किया जा सकता है इस बात पर उनका विश्वास था |
- उनका मानना था कि पहले हमें अपने आप में शान्ति लाना आवश्यक है तभी समाज में क्रान्ति लाना संभव है
- उन्होंने वैयक्तिगत गुणों को समाज एक लिए उपयुक्त बनाने के लिए कहा
- बाबा के कार्यकर्ता भी उन्हीं की तरह निष्काम थे क्योंकि उन्हें अपरिग्रह की अर्थात किसी से कुछ भी न लेने की दीक्षा दी गई थी

८.

बाबा की महान लोगों से भेंट:-

- बाबा गाँधीजी से मिले थे... उन्होंने गांधी को अपनी एक धर्मशाला भेंट देनी चाही थी | उन्होंने गाँधीजी से सेवा की दीक्षा ग्रहण की| अपने एक कीर्तन में बाबा ने गाँधीजी को ‘ईश्वर’ कहा है
- बाबा महामानव बाबा साहेब अंबेडकरजी से भी मिले
- उन्होंने कर्मवीर भाऊराव पाटील जी से भी भेंट की थी

९.

बाबा की खासियत:

- बाबा एक व्यक्ति नहीं थे अपितु एक विचार थे
- वे एक जलती हुई मशाल थे
- न वे रुके न झुके, न थके न हारे, अखंड रूप से चलते रहे, जलते रहे

- बाबा ने इस सृष्टि को ही अपना माना... उन्होंने हवा से बाते कीं... तारों की बातें सुनीं
- बाबा ने अपने-आप को भी श्रेष्ठत्व नहीं लिया .. वे कहते थे कि वे किसी के न तो गुरू है और न कोई उनका शिष्य ही है|
- बाबा मतलब अकेले आदमी की सेना थे.....
- वे जीवन को बहुत महत्व देते थे ... उन्हें जीवन से अत्याधिक लगाव था .....जीवनसन्मुख थे... फिर भी विरागी थे
- वे करुणा की मूर्ति थे इसीलिए उन्होंने अनुभूति से सहानुभूति को अधिक श्रेष्ठ माना...क्योंकि दूसरे के दुःखों को जानन और उन दुःखों का एहसास होना अलग बात है| जब हमें दुसरे के दुःखों का एहसास होता है तभी हम उन दुःखों को दूर करने की कोशिश करते है....
- बाबा ने झाड़ू को स्वावलंबन का प्रतीक माना
- वे कभी मन्दिर नहीं गए क्योंकि उन्होंने इंसान में ही भगवान को देखा..... शायद इसीलिए.. भगवान के अपेक्षा भगवान के भक्तों की फ़िक्र उन्हें अधिक होती थी.... और इसीलिए उन्होंने धर्मशालाओं की स्थापना की
- उन्होंने अपने बर्ताव से आदर्श की स्थापना की
- बाबा ने समाज की प्रगति को ही पाने जीवन का उद्देश्य माना |इसीलिए अनेक संस्थाओं की स्थापना की.... बाबा समाज के लिए जिए... और समाज के लिए ही समर्पित हो गए
- फिर भी उनका जीवन कमल की पत्तों की तरह था..... पानी में रहकार भी पानी से अलग.....

१०.

उद्देश्य:

बच्चो, जिस समाज में हम रहते हैं उस समाज को रहने लायक बनाना हमारा कर्तव्य है...

पर, हम क्या करते हैं... हमारे आस-पास घट रही गलत घटनाओं के बारे में ही सिर्फ बातें करते हैं.... क्या हमें कभी उन परिस्थितियों को बदलने की कोशिश की है?

हम अक्सर सोचते हैं कि, “हम सकेले क्या क्र सकते हैं?” और ये सोच क्र हम शांत बैठ जाते हैं.....

और हमारी यही निष्क्रीयता समाज में फ़ैल रही बुराइयों को अधिक बढ़ावा दी है....

ऐसे समय हमारी सोच को बदलने के लिए हमें हिम्मत और प्रोत्साहन देने के लिए..... गाडगे बाबा जैसे कर्मयोगी का चरित्र बहुत उपयोगी होता है |

अजर आप ध्यानसे यह पाठ पढ़ें तो पाएँगे कि बाबा द्वारा जिस काम का आरंभ हुआ था उस काम में अभी भी हम जैसे कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है...

अंधविश्वास, स्वच्छता, अशिक्षा से हमारी लड़ाई आज भी जारी है...

इस विषय में आपकी सोह को सशक्त करने काम यह पाठ करता है....

इस पाठ को पढ़ते समय आप यह भी सोचे कि आपको किस प्रकार के समाज में रहने की इच्छा है?????

..... और समाज को आर्दश बानाने के लिए आप क्या कर सके हो?????

पुष्टि-धन

आपको बाबा के आवाज़ में एक कीर्तन सुनाया जाएगा|

मूल्यांकन के प्रश्न:-

१. गाडगे बाबा का असली नाम क्या था?

अ. देवदास डेबूजी

आ. देविदास देबूजी

इ. देविदास डेबूजी

ई. ईश्वरदास डेबूजी

२. बाबा ने किस बात का विरोध किया?

अ. कर्मकांडों का

आ. खाने-पीने का

इ. अमीरों का

ई. स्वच्छता का

३. किस प्रकार की पूजा को बाबा ने सबसे अच्छा माना?

अ. समाज की सेवा

आ. ईश्वर की पूजा

इ. बच्चों से खेलना

ई. लोगों को पढ़ाना

४. बाबा की तुलना किससे की गई है?

अ. गुलाब के फूल से

आ. कमल के फूल से

इ. गेंदे के फूल से

ई. कमल के फूल के पत्तों से

worksheet:-

१. गाडगे बाबा ने किस बात का विरोध किया?

२. समाज में जन-जागृति के लिए बाबा ने क्या किया?

३. बाबा के कीतन की क्या खासियत थी?

४. बाबा के चिन्तन की दस सूत्री के बारे में अपने विचार प्रगट करें|

५. आपके अनुसार हम बाबा की त्रिसूत्री को किस पराक्र अपना सकते हैं?

६. बाबा को कमल के पत्तों की उपमा क्यों दी गई है?

७. बाबा के कामों का वर्णन करें|

८. पाठ पढने के बाद बाबा के बारे में आपके मन में जो भी प्रतिमा निर्माण हुई है, उसका वर्णन करें|

९. आपके अनुसार अंधविश्वास को समाज से दूर करने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

१०. पाठ पढ़ें के बाद क्या आपको आपकी कोई सामाजिक जिम्मेदारी महसूस हुई? कौन-सी? आप उसे किस प्रकार निभाएँगे?